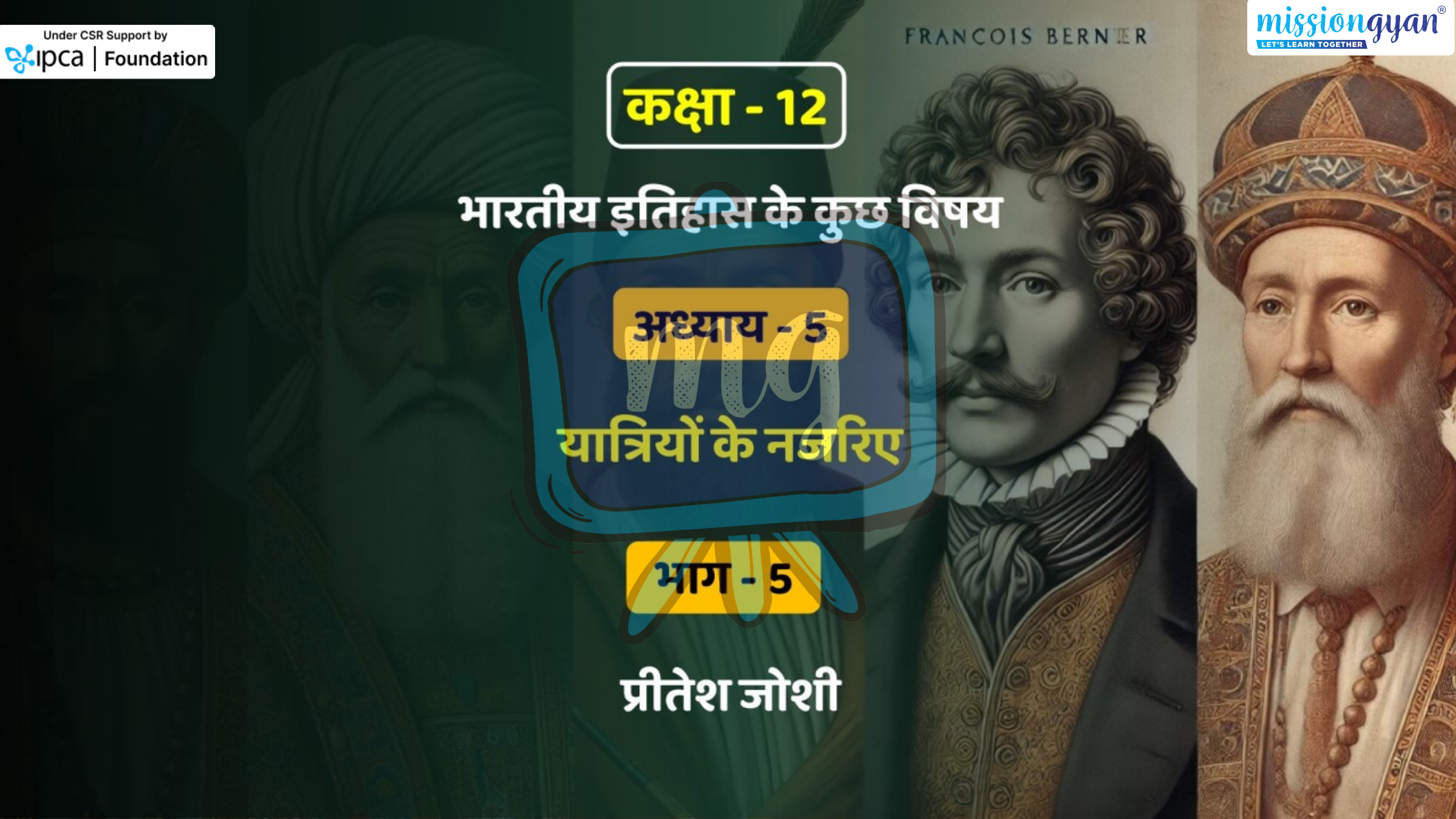
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 5

यात्रियों के नजरिए

भाग - 5

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

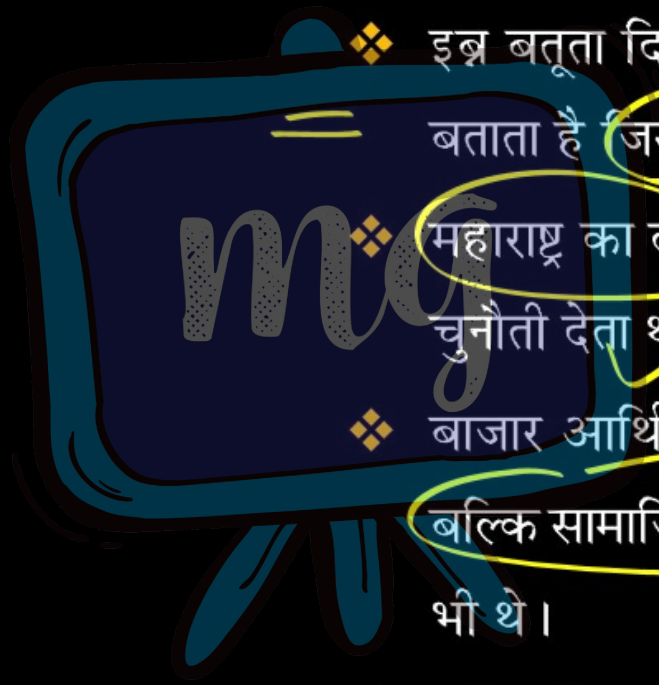
दिल्ली //
+
दौलताबाद

इब्न बतूता और भारतीय शहर :-

- इब्न बतूता ने उपमहाद्वीप के शहरों को उन लोगों के लिए व्यापक अवसरों से भरपूर पाया जिनके पास इच्छा, साधन व कौशल था।
- ये शहर घनी आबादी वाले व समृद्ध थे।
- युद्धों, आदि से यह शहर प्रभावित होते थे।
- अधिकांश शहरों में भीड़-भाड़ वाली सड़कें, चमक-दमक वाले रंगीन बाजार जो विविध वस्तुओं से भरे थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

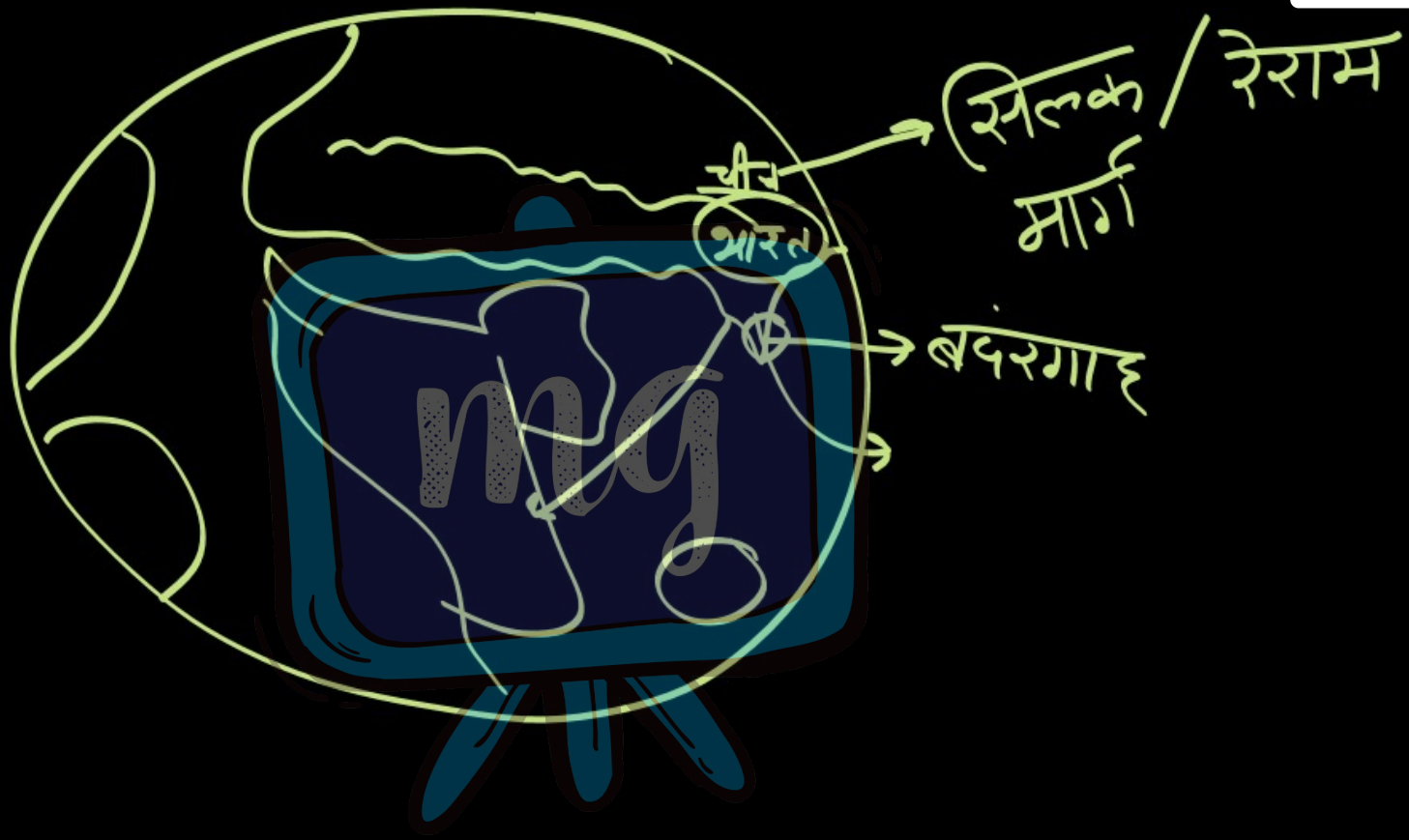
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इब्न बतूता दिल्ली को भारत में सबसे बड़ा शहर बताता है जिसकी आबादी विशाल थी।
- महाराष्ट्र का दौलताबाद भी आकार में दिल्ली को चुनौती देता था।
- बाजार आर्थिक विनिमय के स्थान ही नहीं थे बल्कि सामाजिक व आर्थिक गतिविधियों के केन्द्र भी थे।
- अधिकांश बाजारों में एक मन्दिर व मस्जिद भी होते थे।

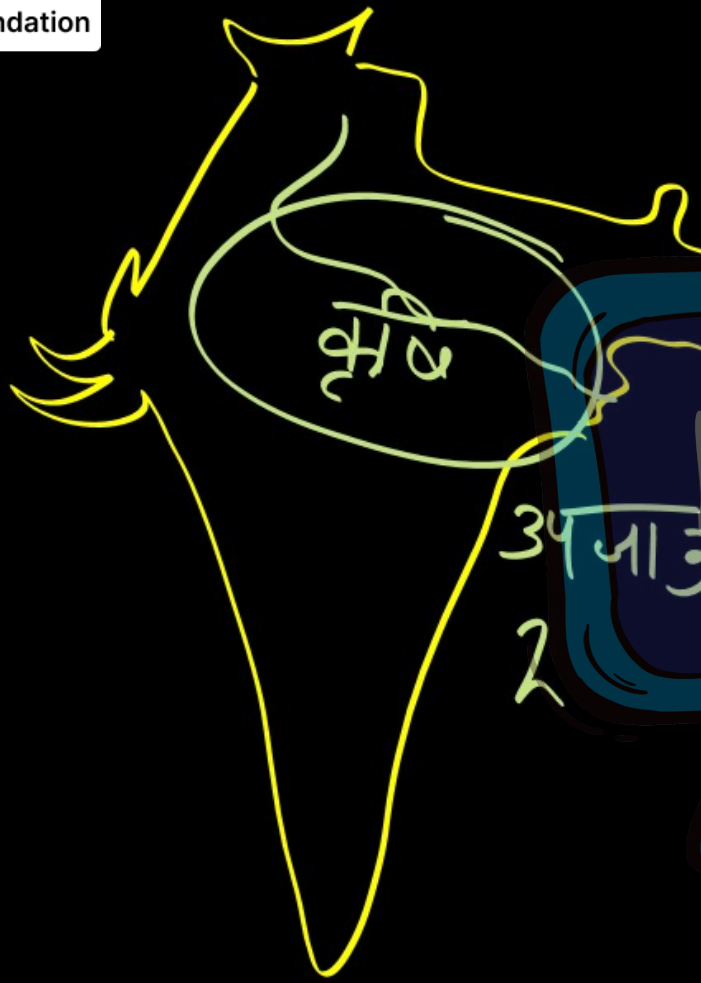
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- इब्न बतूता भारतीय कृषि को अधिक उत्पादनकारी मानता था।

  कारण :-
  - मिट्टी का उपजाऊपन
  - किसानों द्वारा वर्ष में 2 फसलें

    रबी
    खरीफ

- उपमहाद्वीप का व्यापार एशियाई तंत्र में भली भाँति जुड़ा था।
- भारतीय माल की मध्य तथा दक्षिण-पूर्व एशिया, दोनों में बहुत माँग थी। जिससे शिल्पकारों तथा व्यापारियों को भारी मुनाफ़ा होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



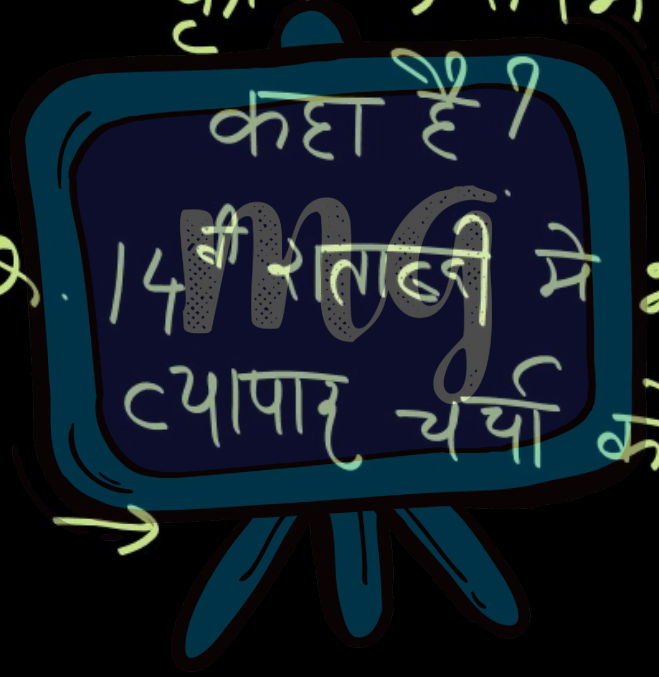
- निर्यात :- भारतीय कपड़ों विशेष रूप से सूती कपड़ा, महीन मलमल, रेशम, जरी, साटन।
- महीन रेशम की कुछ किस्में बहुत महँगी होती थी जिसे अमीर वर्ग ही पहन सकता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

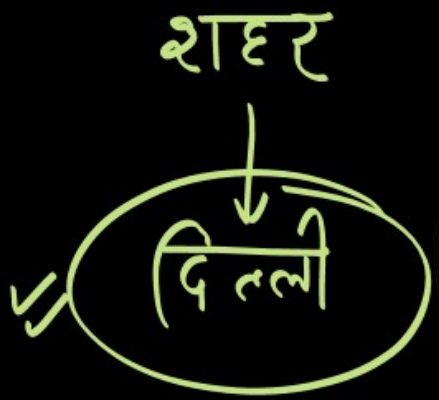
Q. इब्नबतूता ने भारतीय कृषि के संदर्भ में क्या कहा है?

Q. 14वीं शताब्दी में भारत के व्यापार चर्चा करें?



Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

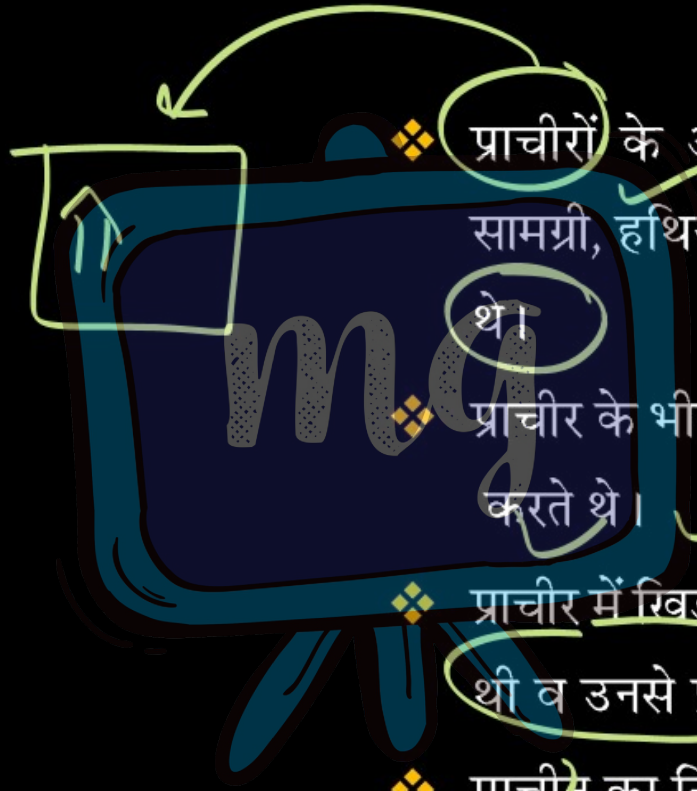


देहली का वर्णन :-

- तत्कालीन ग्रंथों में दिल्ली को देहली नाम से उद्धत किया गया।
- दिल्ली बड़े क्षेत्र में फैला घनी आबादी वाला शहर था।
- शहर के चारों ओर बनी प्राचीन अतुलनीय थी।
- दीवार की चौडाई ग्यारह (11) हाथ (1 हाथ = 20 इंच लगभग) (17.6 फीट)
- दीवार में रात्रि के पहरेदार तथा द्वारपालों के कक्ष थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

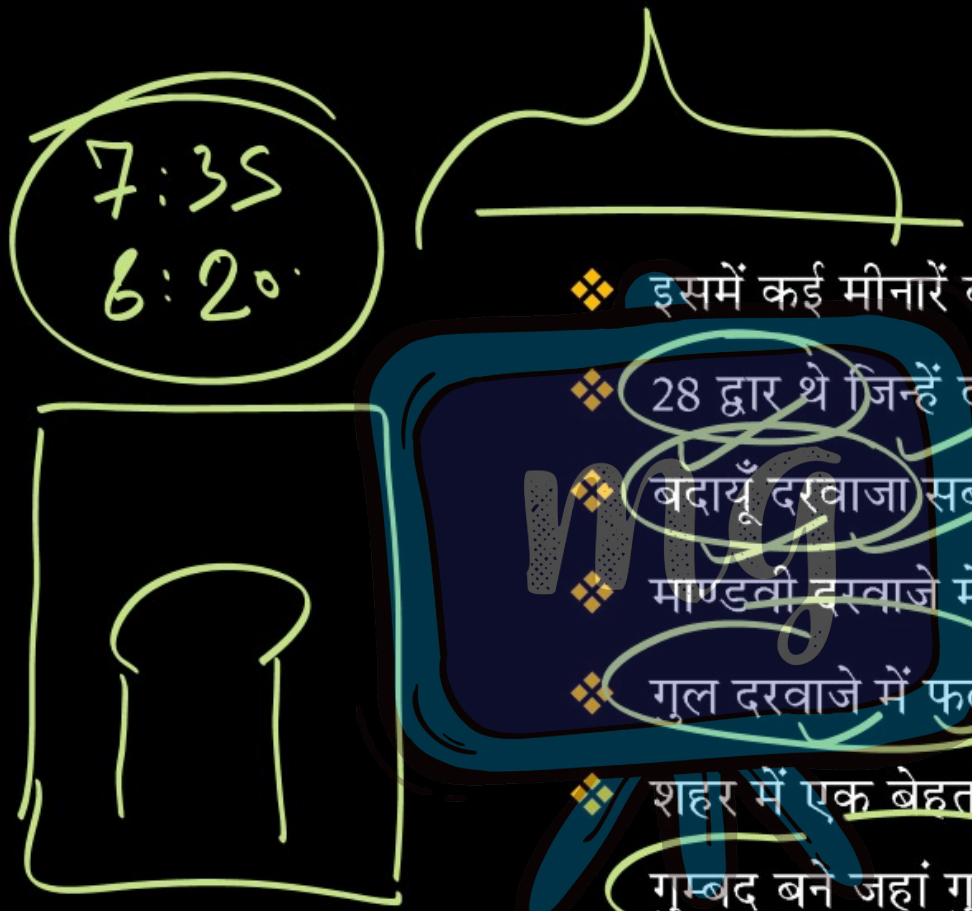
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- प्राचीरों के अन्दर भण्डारगृह थे जिनमें खाद्य सामग्री, हथियार, बारूद आदि सामग्री के भण्डार थे।
- प्राचीर के भीतर सैनिक व घुड़सवार आया जाया करते थे।
- प्राचीर में खिड़कियां थी जो शहर की ओर खुलती थी व उनसे प्रकाश अन्दर आता था।
- प्राचीर का निचला भाग पत्थर व ऊपर का ईटों से बना था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

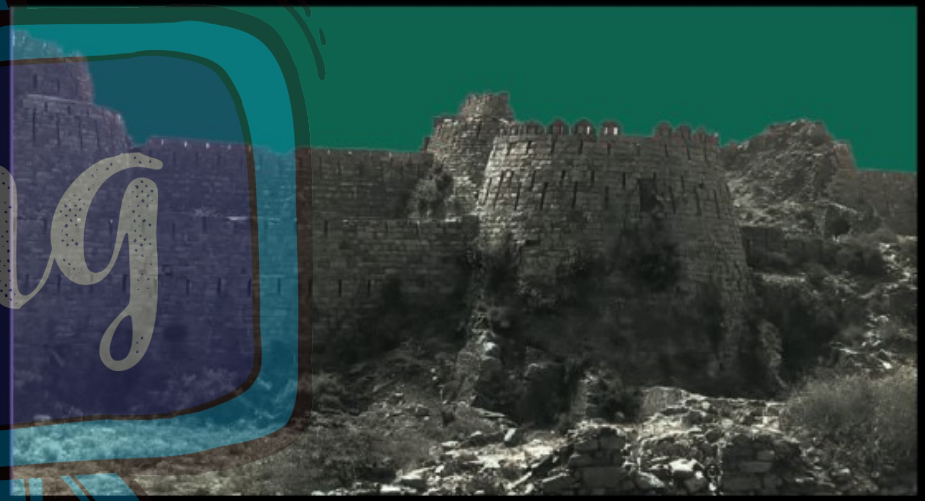
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इसमें कई मीनारें बनीं थी।
- 28 द्वार थे जिन्हें दरवाजा कहते थे।
- बदायूँ दरवाजा सबसे विशाल था।
- माण्डवी दरवाजे में अनाज मण्डी।
- गुल दरवाजे में फूलों का बगीचा।
- शहर में एक बेहतरीन कब्रगाह जिसमें कई कब्रों पर गुम्बद बने जहां गुम्बद नहीं है वहाँ मेहराब है।
- कब्रगाह में कंदाकार में चमेली या जंगली गुलाब उगाये जाते थे जहाँ सभी मौसम में फूल खिले रहते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

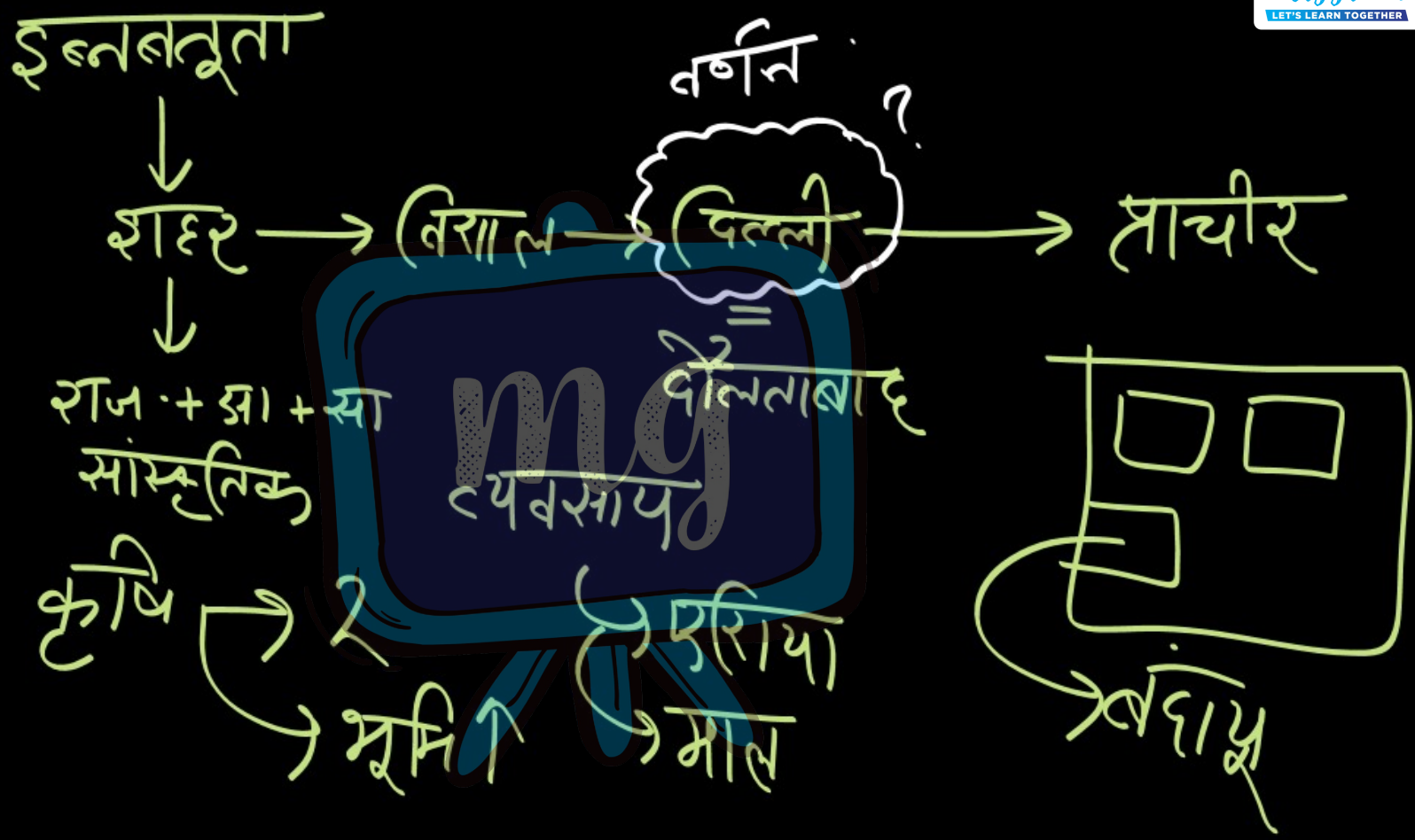
missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



बस्ती की किलेबंदी की दीवार
का एक हिस्सा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



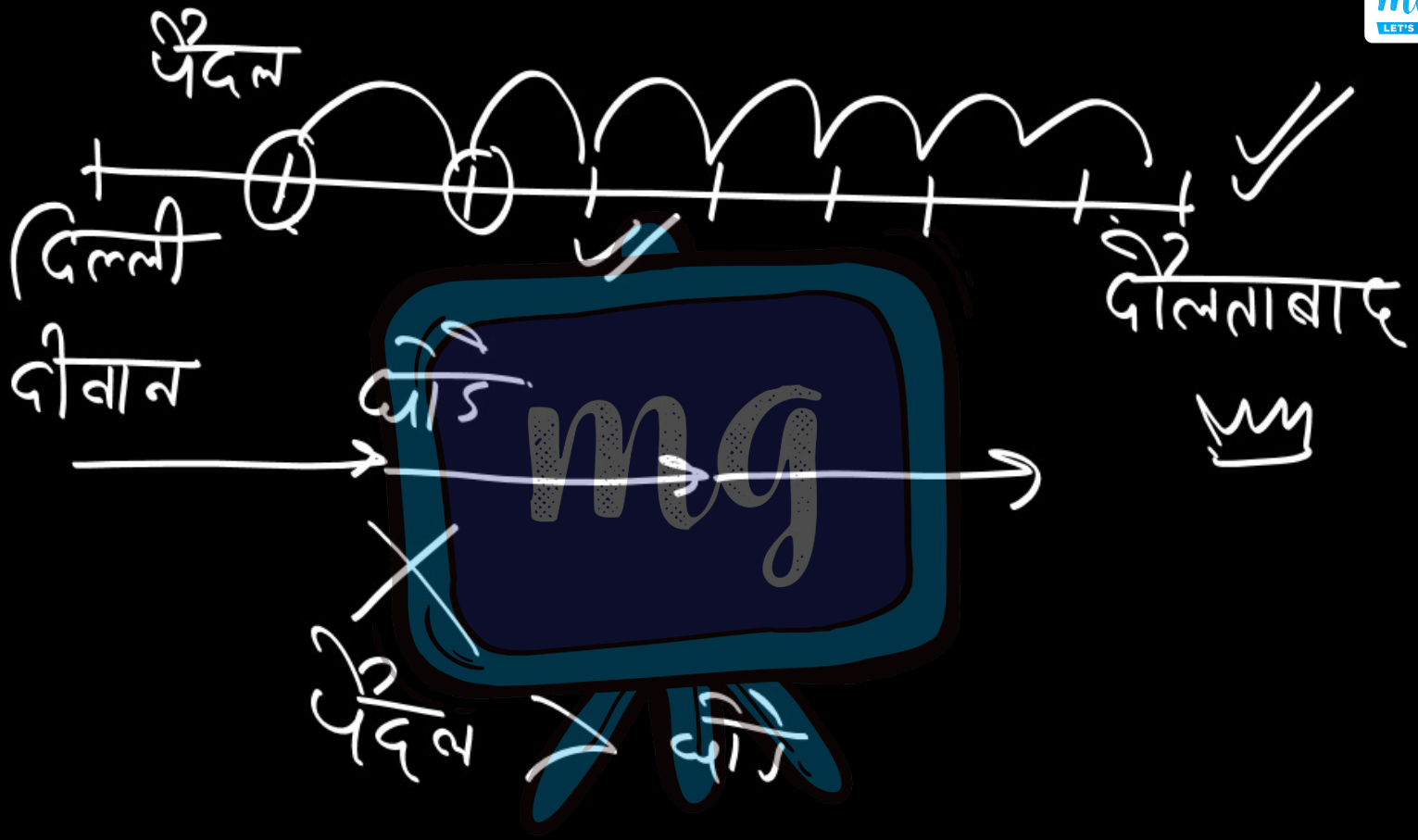
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



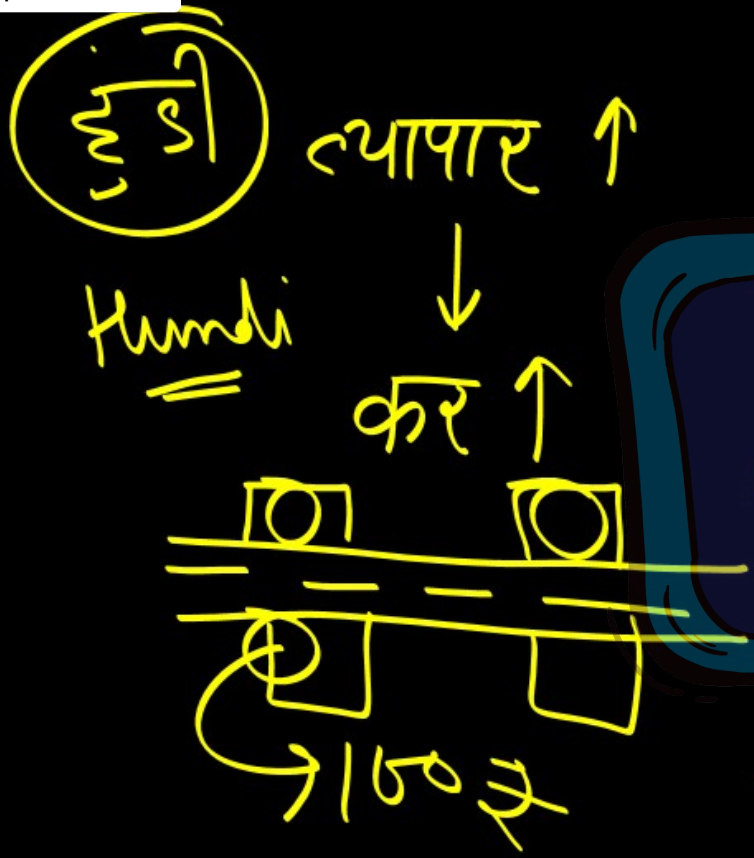
Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER



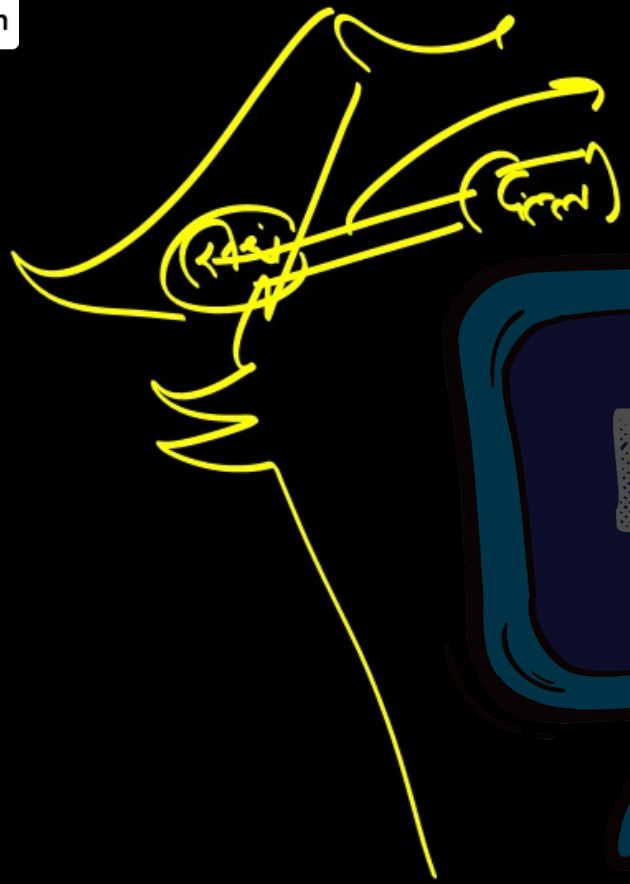
302

संचार की एक अनूठी व्यवस्था – इब्न बतूता के अनुसार–

- इब्न बतूता डाक प्रणाली की कार्यकुशलता से विशेष प्रभावित थे।
- व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए राज्य विशेष प्रयास करता था।
- लगभग सभी मार्गों पर सराय व विश्राम गृह बने हुए थे।
- इस व्यवस्था से व्यापारियों को सूचना भेजना, उधार प्रेषित करना व अल्प सूचना पर माल भेजना सुविधाजनक हो गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER



- सिंध से दिल्ली की यात्रा में 50 दिन लगते थे जबकि सुल्तान को सूचना इस डाक व्यवस्था से 5 दिन में ही मिल जाती थी।

डाक व्यवस्था – घोड़े पर और पैदल :-

इब्न बतूता ने डाक व्यवस्था का वर्णन निम्नानुसार किया है –

1. **अश्व डाक व्यवस्था :-**
   - इसको 'उलुक' नाम दिया गया।
   - प्रत्येक चार मील पर स्थापित
   - राजकीय घोड़ों द्वारा चालित

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

2. पैदल डाक व्यवस्था :-

- इसमें प्रति मील तीन अवस्थान होते हैं। इसे "दाबा" कहा जाता है और यह एक मील का एक तिहाई होता है।
- प्रत्येक तीन मील पर एक घनी आबादी का गाँव, जिसके तीन मण्डप होते थे। जिसमें लोग कार्य प्रारम्भ के लिए तैयार रहते थे।
- प्रत्येक के हाथ में दो हाथ लम्बी छड़ी होती थी जिसके ऊपर ताँबे की घंटियाँ लगी होती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- सन्देशवाहक जब यात्रा प्रारम्भ करता था तो एक हाथ में पत्र तथा दूसरे में घंटियों वाली छड़ी लिए अपनी क्षमतानुसार दौड़ता था।
- मंडप के लोग घंटियों की आवाज से सतर्क हो जाते व सन्देशवाहक से पत्र ले लगले दावा तक दौड़ लगाता और यही क्रम चलता रहता था।
- इब्न बतूता ने पैदल डाक व्यवस्था को अश्व डाक व्यवस्था से तीव्र बताया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

Q. इब्नबतूता ने संचार प्रणाली की क्या विशेषता बताई है?

उदाहरण: (रेखा) 60 (दिल्ली)

5

1. संचार → अनुवी
2. कर ↑ → राज्य संचार ↑
3. सराय/विश्रामगृह → रुकने, उधार, सूचना
4. डाक → पैदल, घोड़े

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

